

04-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - ज्ञानवान बनो तो धनवान (automatically) बन जायेंगे, जगदम्बा ज्ञान-ज्ञानेश्वरी ही राज-राजेश्वरी बनती है"






प्रश्नः- बाप को अपने बच्चों पर तरस पड़ता है इसलिए श्रेष्ठ तकदीर बनाने के लिए कौन सी श्रीमत देते हैं?



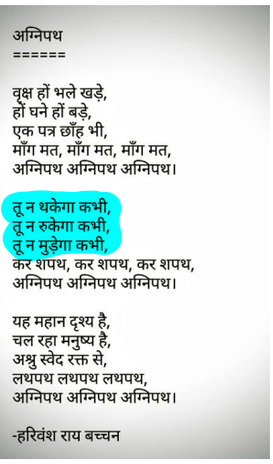


याद से विकर्म विनाश।



उत्तरः- मीठे बच्चे सिर पर जो पापों का बोझा है, उसे मौत के पहले याद की यात्रा में रहकर उतार दो। कोई भी विकर्म नहीं करो। बाप आये हैं तुमको जमघटों की फाँसी से छुड़ाने, इसलिए अब ऐसा कोई कर्म नहीं करना।

गीतः- रात के राही थक मत जाना Click



रात के राही
रात के राही थक मत जाना
सुबह की मंज़िल दूर नहीं, दूर नहीं
रात के राही ...

धरती के फैले आँगन में
पल दो पल है रात का डेरा
धरती के फैले आँगन में
पल दो पल है रात का डेरा
ज़ुल्म का सीना चीर के देखो
झाँक रहा है नया सवेरा
ढलता दिन मजबूर सही
चढ़ता सूरज मजबूर नहीं, मजबूर नहीं
थक मत जाना, हो राही थक मत जाना
रात के राही ...

सदियों तक चुप रहनेवाले
अब अपना हक़ लेके रहेंगे
सदियों तक चुप रहनेवाले
अब अपना हक़ लेके रहेंगे
जो करना है खुल के करेंगे
जो कहना है साफ़ कहेंगे
जीते जी घुट घुट कर मरना
इस जग का दस्तूर नहीं, दस्तूर नहीं
थक मत जाना, हो राही थक मत जाना
रात के राही ...

टूटेंगी बोझल ज़ंजीरें
जागेंगी सोयी तक़दीरें
टूटेंगी बोझल ज़ंजीरें
जागेंगी सोयी तक़दीरें
लूट पे कब तक पहरा देंगी
ज़ंग लगी ख़ुनीं शमशीरें
रह नहीं सकता इस दुनिया में
जो सब को मंज़ूर नहीं, मंज़ूर नहीं
थक मत जाना, हो राही थक मत जाना
रात के राही ...

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने इस गीत का अर्थ समझा। बाप आये हैं भक्ति रूपी रात का विनाश कर दिन स्थापन करने क्योंकि बाप को ही बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ। समझते हैं कोई समय हम पावन थे, अब पतित हैं। चीज़ वह मांगी जाती है जो पहले थी अब नहीं है। तुम बच्चे जानते हो पवित्र देवी देवताओं की राजधानी थी। ज्ञान-ज्ञानेश्वरी ही फिर राज-राजेश्वरी बनेगी। जैसे जगत अम्बा, लक्ष्मी अलग-अलग हैं। लक्ष्मी को कभी जगत अम्बा नहीं कहेंगे। लक्ष्मी को उनके दो बच्चे ही मातेश्वरी कहेंगे। यहाँ जगत अम्बा को सब भारतवासी जो भी रिलीजस माइन्डेड हैं, सब माँ कहते हैं। देवी-देवताओं के मन्दिर में जाकर उनकी भक्ति करते हैं। अभी तुमको मालूम हुआ है कि हमने बहुत भक्ति की है। दान-पुण्य आदि जितना तुमने किया है उतना और कोई ने नहीं किया होगा। तुमने सबसे जास्ती भक्ति की है। अब तुमने अपना यादगार जीते जी देखा है। आदि देव और आदि देवी हैं, जिसको जगत अम्बा कहते हैं। अभी तुम जानते हो जगत अम्बा धनवान बनती है। तुम उनके बच्चे हो ना। अब तुम पढ़ रहे हो। वह है गॉडेज़ ऑफ





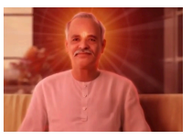






दुध की (majority नौकर-नौकरी)

नॉलेज। उस नॉलेज से कभी राजा-रानी नहीं बनते हैं। तुम जानते हो हम आत्मायें शिवबाबा के बच्चे हैं और यह है प्रजापिता ब्रह्मा। शिवबाबा इन द्वारा नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। यह अच्छी रीति समझकर धारण करना है। कहते हैं ना शेरनी के दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यह ज्ञान भी है सर्वशक्तिमान् परमपिता परमात्मा का। उसके लिए भी **बुद्धि रूपी बर्तन सोने का चाहिए**। नई दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों सोने के बनते हैं। अभी तुम्हारी आत्मा पत्थर का बर्तन है। तो शरीर भी ऐसा ही है। भारत में ही श्याम और सुन्दर, पतित और पावन कहते हैं। दूसरे कोई खण्डों में ऐसे नहीं कहेंगे कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ। कहते हैं दु:ख से छुड़ाए, शान्ति में ले जाओ। विवेक भी कहता है कि हम भारतवासी पावन थे, इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। भल कितने भी बड़े आदमी हैं। वह भी गुरू के पाँव में गिरते हैं क्योंकि गुरू ने संन्यास धारण किया हुआ है। 5 विकारों को छोड़ा है तो विकारी निर्विकारियों को मान देते हैं। पवित्रता का ही मान है। द्वापर से राजा-रानी और वजीर होते हैं। सतयुग

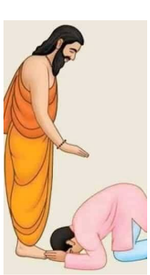














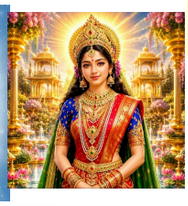
Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

ये तो पक्का कर लो..

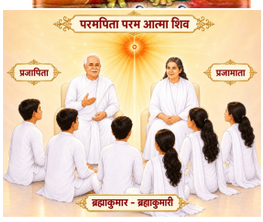


में राजा-रानी को वजीर होते नहीं। जब पतित राजा-रानी होते हैं तो एक वजीर रखते हैं, अब तो बहुत पतित हो गये हैं तो सैकड़ों वजीर (Ministers) रखते हैं। यह है ड्रामा की भावी। बाबा बतलाते हैं देखो कैसे ड्रामा की भावी बनी हुई है। तो पहले जरूर भारत ही था फिर दूसरे धर्म वाले आये। बाप समझाते हैं इस समय तुम हो ज्ञान ज्ञानेश्वरी। जगत अम्बा है ब्रह्मा की बेटी, गॉडेज ऑफ नॉलेज। जगत अम्बा ज्ञानवान है, जो दूसरे जन्म में धन लक्ष्मी बनती है। तुमको अभी बाप ज्ञान सिखा रहे हैं। तुम जानते हो हम वहाँ धनवान बनेंगे। दुनिया में यह किसको पता नहीं है कि यह लक्ष्मी-नारायण धनवान कैसे बनें। (But we know, How Lucky & Great we are..!) लक्ष्मी-नारायण वही ब्रह्मा सरस्वती हैं। ब्रह्मा जगत पिता है तो जरूर ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ बहुत होंगे। तुम कितने ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ हो। तुम जानते हो हम इस ज्ञान से भविष्य में ऐसे धनवान बनेंगे। एकदम गॉडेज आफ वेल्थ, इनसे अधिक वेल्थ किसके पास हो नहीं सकती इसलिए गाया जाता है - नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इनकम, जज, बैरिस्टर आदि नॉलेज से बनते हैं ना। तो यह इनकम है ना। कोई-कोई डॉक्टर को एक-एक केस का लाख रूपया मिलता है। कोई राजा-

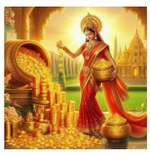




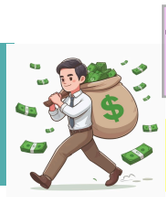






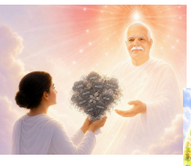






रानी वा प्रिन्स बीमार हुआ, डॉक्टर ने बीमारी से छुड़ाया तो खुशी में आकर बड़ा-बड़ा मकान बनाने के लिए पैसा दे देते हैं। कितनी इनकम हुई। तो पढ़ाई से ही पद पाते हैं। यह तुम्हारी पढ़ाई भी है, धन्धा भी है।





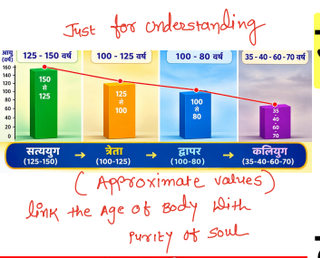


तुम मीठे बच्चे अब सौदा करने आये हो। कखपन दे लाख कमाते हो। बाप अविनाशी सर्जन भी है, सदैव हेल्दी बनने के लिए बाबा योग सिखा रहे हैं। बाबा कहते हैं **मैं गैरन्टी करता हूँ** – तुम एवर हेल्दी 21 जन्मों के लिए बनेंगे। तो ऐसे सर्जन की दवाई अर्थात् श्रीमत पर क्यों नहीं चलना चाहिए। बाप की मत मानो। मुझे याद करो। कहते हैं ना सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह क्लेष मिटे सब तन के। भक्ति मार्ग में कोई कलह-क्लेष मिटता नहीं है। बहुत संन्यासी लोग भी बीमारी में अर्धांग में पड़े रहते हैं। जैसे पागल हो जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप की श्रीमत पर चलेंगे तो हम एवरहेल्दी बनेंगे। वहाँ आयु एवरेज 125-150 वर्ष रहती है। ऐसे नहीं कि द्वापर









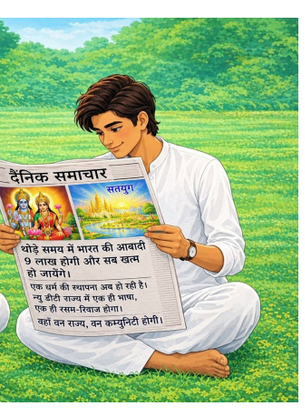


में एकदम 35 वर्ष की हो जाती है। नहीं, पहले 100-125 होगी। फिर 70-80 की होगी, अब तो 35-40 वर्ष तक आकर पहुँची है। **छोटेपन में ही मर पड़ते हैं क्योंकि भोगी हैं।** तुम जानते हो - अभी भोगी से योगी बन रहे हैं। वहाँ आयु इतनी बड़ी होगी जो अकाले मृत्यु कब होगी नहीं। बाप स्मृति दिलाते हैं, तुमको कितना राज्य भाग्य था। अब रावण ने लूट लिया। वहाँ यह मन्दिर आदि होते नहीं। तुम्हारा स्लोगन भी है -भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म जिंदाबाद, बाकी सब मुर्दाबाद अर्थात् अनेक धर्म विनाश। वहाँ सिर्फ एक ही भारत खण्ड था। एक खण्ड में मनुष्य भी जरूर थोड़े होंगे। तुम लिख सकते हो थोड़े समय में भारत की आबादी 9 लाख होगी और सब खत्म हो जायेंगे। एक धर्म की स्थापना अब हो रही है। न्यु डीटी राज्य में एक ही भाषा, एक ही रसम-रिवाज होगा। यहाँ हर एक की रसम अपनी। वहाँ वन राज्य, वन कम्युनिटी थी। तुम ऐसे-ऐसे स्लोगन अखबार में भी डाल सकते हो। बाबा से राय लेते हैं कि पैसा खर्च कर अखबार में डालें? बाबा कहेंगे भल डालो। मनुष्यों को मालूम



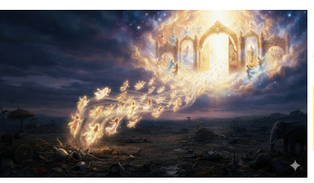








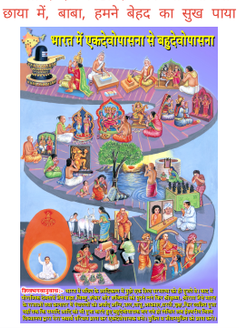
पड़े कि क्या हो रहा है। कहते भी हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था। वन रिलीजन, वन कम्युनिटी थी, सूर्यवंशी देवी-देवताओं की। इस महाभारत लड़ाई के बाद स्वर्ग के गेट खुले थे। अखबार में डालो नाम बी. के. का हो। परन्तु बी. के. तब कहला सकते हैं जब पवित्र रहें। बाप को बुलाया है। अब बाप आये हैं तो अब बाप से प्रतिज्ञा करो।

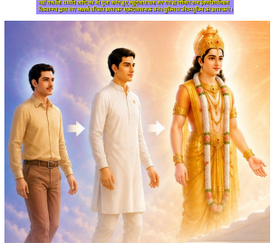


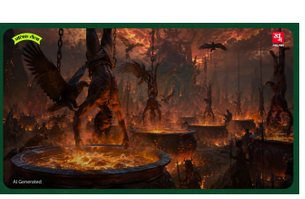


मांग रहे थे, दर-दर भटके, मिलता कहीं था प्यार नहीं
बिन माँगे हमें सब कुछ देते, माँगने की दरकार नहीं
सब कुछ तेरा, अब तो मेरा, हम पर तेरा साया है
इस छाया में, बाबा, हमने बेहद का सुख पाया है

जिसके सिमरन से भक्तों के भाग्य द्वार खुल जाते हैं
एक झलक के दर्शन से ही, मन चाहे फल पाते हैं
पास में लाके, हमें बिठाके, नैनन आन समाया है
इस छाया में, बाबा, हमने बेहद का सुख पाया है









याद करो...

भक्ति मार्ग में कितने धक्के खाये, यज्ञ, तप, दान आदि किया। पहले एक शिव की भक्ति करते थे फिर देवताओं की, अभी तो व्यभिचारी बन पड़े हैं। अब बाप तुमको सब दु:खों से छुड़ाते हैं। बाप तुम बच्चों को नॉलेज दे कितना ऊंच, मनुष्य से देवता बनाते हैं। सतयुग में तुम्हारे पास सब कुछ सोने का होगा। बाप तुमको श्रीमत दे स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तुम फिर श्रीमत पर क्यों नहीं चलते हो। बाप जमघटों की फाँसी से छुड़ाते हैं, गर्भजेल की सजाओं से छुड़ाते हैं। तुम स्वर्ग में गर्भ महल में रहते हो। यहाँ है जेल क्योंकि मनुष्य पाप कर्म करते हैं। वहाँ 5 विकार ही नहीं फिर भी राजा-रानी प्रजा के मर्तबे में तो फर्क होगा ना। पैसा कमाने के लिए मनुष्य मेहनत तो करते हैं ना। वहाँ वजीर नहीं क्योंकि तुम

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

v/s

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा





Attention Please..!



Subtle Point to understand

Point to be Noted







यहाँ की प्रालब्ध पाते हो। अब बाप कहते हैं बच्चे तुम श्रीमत पर चलो। मैं दूरदेश से आया हूँ पतित शरीर में, पतित राज्य में। यह है रावण का देश, तुम बच्चों को आकर वर्सा देता हूँ। ऐसे बाप की आज्ञा न मानना, वह तो Definition of कपूत ठहरा। विकार के पीछे इतना थोड़ेही हैरान होना चाहिए। बाबा कहते हैं **यह विकार दुःख देने वाले हैं**। Shiv भगवान उवाच: पतितों को पावन बनाना यह मेरा काम है। हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा... कितना प्यार से समझाते हैं - खाओ, पियो सुखी रहो, यह याद रखो हम शिवबाबा के पास आये हैं, उनसे हमारी पालना होती है। अगर मित्र-सम्बन्धियों आदि की चीज़ पहनेंगे तो वह याद आयेंगे, पद भ्रष्ट हो जायेगा। यहाँ शिवबाबा के भण्डारे से, पतित-पावन बाप के यज्ञ से परवरिश होनी है, न कि पतित घर से। और किसी की दी हुई चीज़ होगी तो वह याद आयेगा। उसके लिए गायन है **अन्तकाल जो स्त्री सिमरे...** कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते बुद्धि से समझना है कि यह सब खत्म हुए पड़े हैं। हमारा तो एक बाबा है। अब बाप की कभी माला सिमरी जाती है क्या? मैं तुम बच्चों को स्मृति दिलाता हूँ कि मुझे



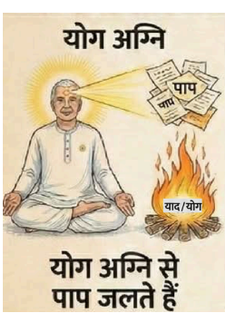




याद करो, तुमको बहुत बल मिलेगा, विकर्म विनाश होंगे, बलवान बन जायेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण



बलवान हैं ना। जो बलवान होते हैं वह राजाई पाते हैं। बाबा अपना मिसाल बताते हैं। मैंने 12 गुरू किये, गुरू ने कहा सुबह को उठकर 1000 मालायें जपो। हम कहते थे कोई और टाइम बताओ। सारा दिन धन्धा-धोरी से थक जाते हैं। जैसे तुम भी कहते हो - बाबा सवेरे उठ नहीं सकते। बाप कहते हैं **ऐसे मत कहो** हम पवित्र नहीं रह सकते, याद में नहीं रह सकते। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे।



तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। यह अन्तिम जन्म है जरूर पवित्र बनो। बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो क्या पद पायेंगे। आधाकल्प से मुझे बुलाया। अब मैं कहता हूँ पावन बनकर मुझे याद करो। औरों को भी रास्ता बताते रहो, मैसेज देते रहो। बाप कहते हैं मन्मनाभव। मौत सामने खड़ा है। तुमको ही मैसेन्जर अथवा पैगम्बर कहा जाता है। तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई मैसेन्जर बन नहीं सकता। पतित-पावन शिवबाबा आते हैं। किसमें प्रवेश करते हैं, यह भी लिखा हुआ है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। यह समझते थोड़ेही है। सूक्ष्मवतन में

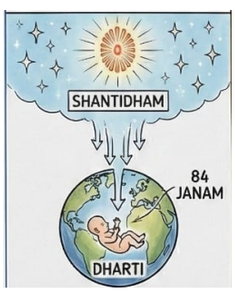


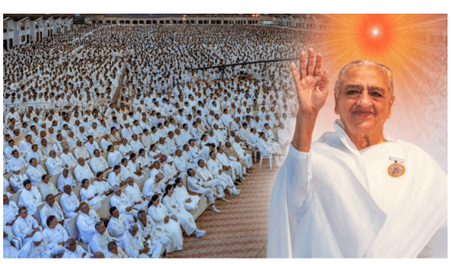






प्रजापिता ब्रह्मा होगा क्या? यहाँ ही पतित से पावन बनते हैं। साइलेन्स बल से स्थापना होती है, साइंस बल से विनाश। सभी कहते हैं शान्ति कैसे मिले। अब आत्मा तो है ही शान्त स्वरूप। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने, यहाँ शान्त कैसे रहेंगे। वह शान्ति शान्तिधाम में मिलेगी, यहाँ तो दु:ख मिलेगा। सतयुग में सुख-शान्ति दोनों होंगे।

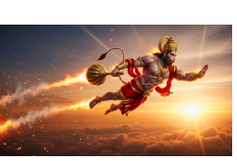


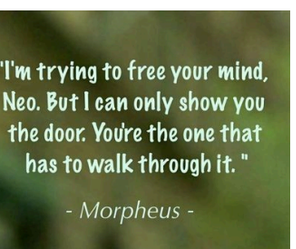


अब तुम बच्चे यहाँ सम्मुख सुनते हो। बाप कहते हैं पतित मेरे साथ कब न मिलें। नहीं तो ले आने वाली ब्राह्मणी पर पाप चढ़ेगा। **(इन्द्र सभा की परी का मिसाल)** वास्तव में इन्द्र सभा यह है। यह ज्ञान सब्ज परियाँ, पुखराज परियाँ हैं। तो और ही धक्का लगेगा। **बाबा सख्त मना करते हैं।** कोई पतित को ले नहीं आना है। आगे बाबा हमेशा पूछते थे कि प्रतिज्ञा किया है! कहते थे पुरुषार्थ कर रहा हूँ। जब पक्का निश्चय हो तब मिले। अगर मिलकर विकार में गया तो सौ गुना दण्ड पड़ेगा। बाप समझेगा शायद इनकी तकदीर में नहीं है। बाप तो तदबीर बताते हैं तकदीर

Attention Please..!

Feel the Force





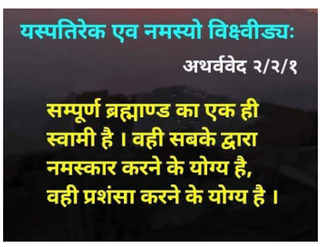
I can only show you the door...

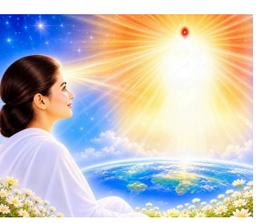


बनाने के लिए। फिर ऐसे बाप का कहना न माने तो क्या गति होगी! बाप को तरस पड़ता है, बाप कहते हैं अपने को करेक्ट करते जाओ। ऐसे न हो चलते-चलते मर जाओ। डर रहना चाहिए, हम बाप को याद कर पापों का बोझा उतारें। अच्छा! -









सबकी सद्गति करने वाला एक ही शिवबाबा है, उनका तो फोटो निकाल नहीं सकते उनको दिव्य दृष्टि से ही देख सकते हैं। बाकी जाना जा सकता है। अच्छा!

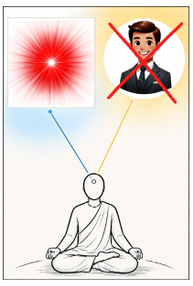
मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।





धारणा के लिए मुख्य सारः-

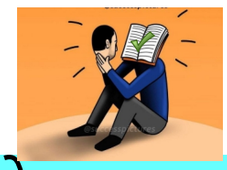




1) ऐसी अवस्था बनानी है जो अन्तकाल में एक बाप की याद आये। दूसरा कोई याद न आये, बुद्धि में रहे "यह सब विनाश होने वाला है।"

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर







2) अपने आप को करेक्ट करना है, इस अन्तिम जन्म में पवित्र जरूर बनना है। डर रखना है कि हमसे कोई पाप कर्म न हो जाए।"







Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

04-11-2(:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: ड्रामा की ढाल को सामने रख खुशी की खुराक खाने वाले सदा शक्तिशाली भव

Finale Achievement









खुशी रूपी भोजन आत्मा को शक्तिशाली बना देता है, कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं।



इसके लिए ड्रामा की ढाल को अच्छी तरह से कार्य में लगाओ।



Advantages

यदि सदा ड्रामा की स्मृति रहे तो (1) कभी भी मुरझा नहीं सकते, (2) खुशी गायब हो नहीं सकती



क्योंकि यह ड्रामा कल्याणकारी है इसलिए अकल्याणकारी दृश्य में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा समझ सदा खुश रहेंगे।







स्लोगन: परचिंतन और पर-दर्शन की धूल से दूर रहने वाले ही सच्चे अमूल्य हीरे हैं।





ये अव्यक्त इशारे –

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो







सम्पन्नता वा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए देह के अभिमान से सम्पूर्ण समर्पण होना है।



देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए तब कहा जायेगा सर्व समर्पणमय जीवन,



ऐसे जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले हैं उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जाती है और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब साथ जायेंगे।

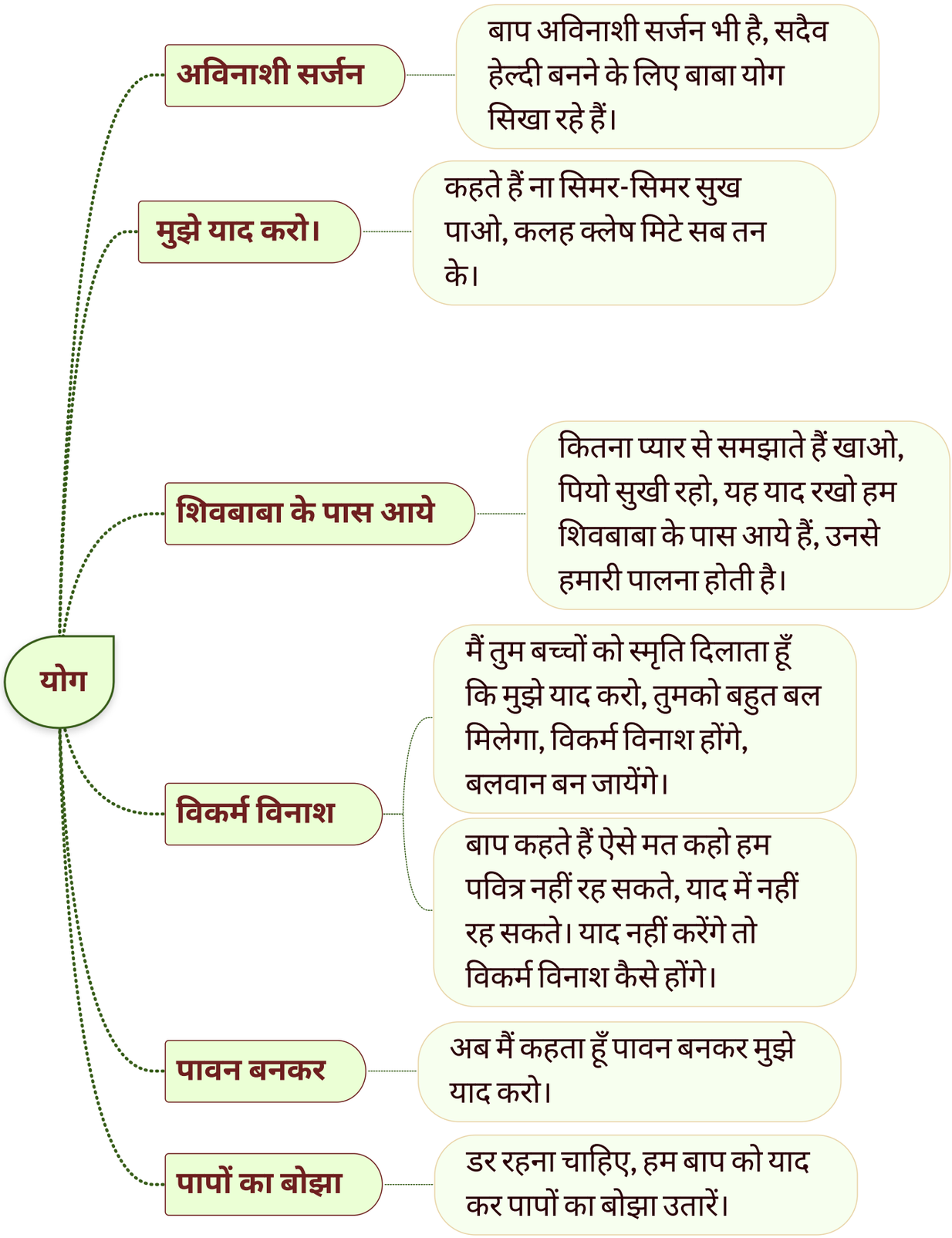


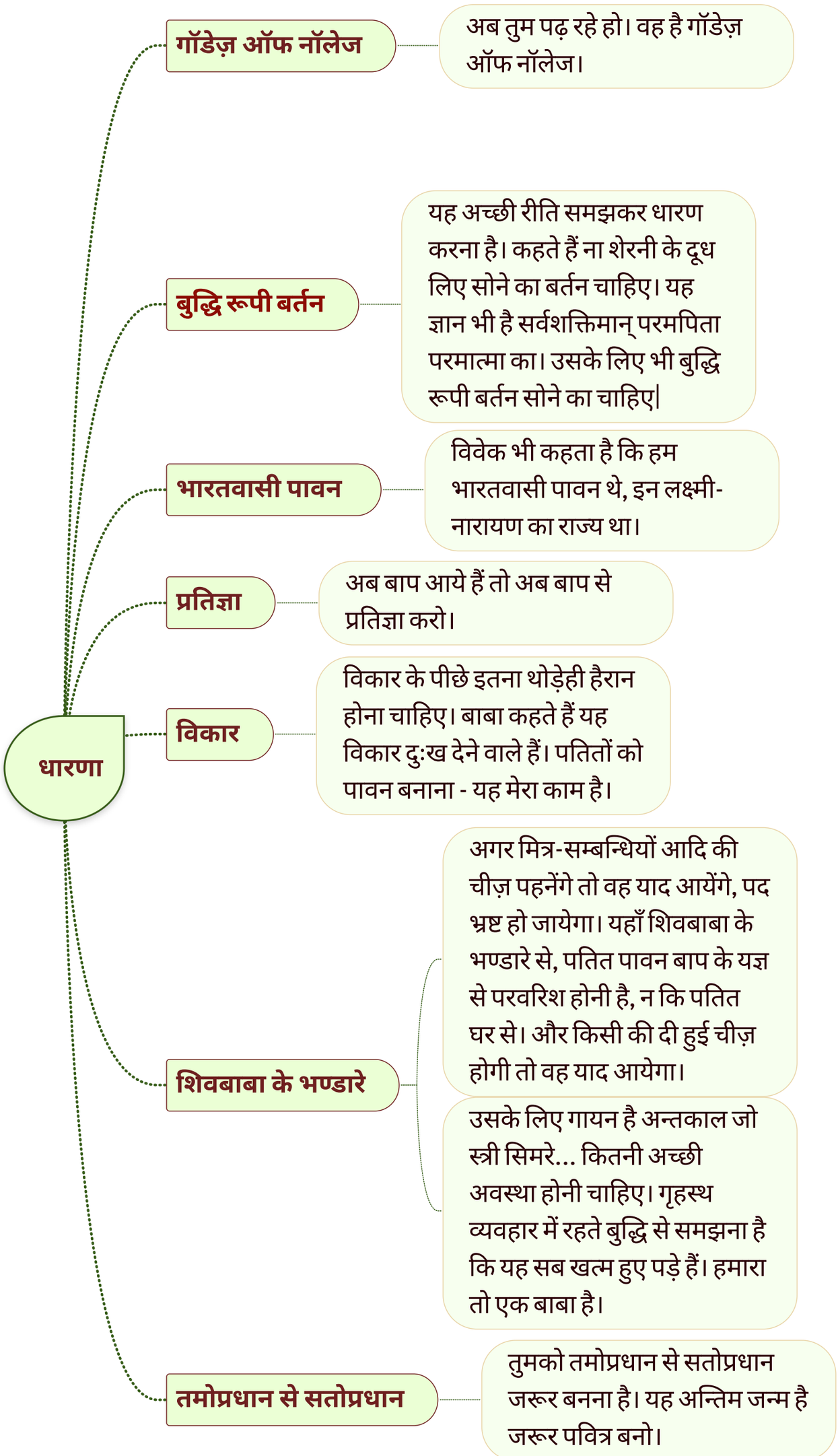


Mind Mapping of SM: 04/11/2026

- ज्ञान
  - आत्मा
    - तुम जानते हो हम आत्मायें शिवबाबा के बच्चे हैं और यह है प्रजापिता ब्रह्मा।
    - नई दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों सोने के बनते हैं।
    - अभी तुम्हारी आत्मा पत्थर बर्तन है। तो शरीर भी ऐसा ही है।
    - अभी तुम्हारी आत्मा पत्थर बर्तन है। तो शरीर भी ऐसा ही है।
    - अब आत्मा तो है ही शान्त स्वरूप।
      - यहाँ आये हैं पार्ट बजाने, यहाँ शान्त कैसे रहेंगे। वह शान्ति शान्तिधाम में मिलेगी, यहाँ तो दु:ख मिलेगा।
  - परमात्मा
    - बाप आये हैं भक्ति रूपी रात का विनाश कर दिन स्थापन करने क्योंकि बाप को ही बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ।
      - समझते हैं कोई समय हम पावन थे, अब पतित हैं। चीज़ वह मांगी जाती है जो पहले थी अब नहीं है।
    - बाप समझाते हैं इस समय तुम हो ज्ञान ज्ञानेश्वरी।
    - बाबा कहते हैं मैं गैरन्टी करता हूँ - तुम एवरहेल्दी 21 जन्मों के लिए बनेंगे।
    - बाप स्मृति दिलाते हैं, तुमको कितना राज्य भाग्य था।
    - **बाप जमघटों की फाँसी से छुड़ाते हैं, गर्भजेल की सजाओं से छुड़ाते हैं।**
  - ड्रामा
    - द्वापर से राजा-रानी और वजीर होते हैं।
      - जब पतित राजा-रानी होते हैं तो एक वजीर रखते हैं, अब तो बहुत पतित हो गये हैं तो सैकड़ों वजीर रखते हैं।
    - सतयुग में राजा-रानी को वजीर होते नहीं।
    - यह है ड्रामा की भावी। बाबा बतलाते हैं देखो कैसे ड्रामा की भावी बनी हुई है।
  - ब्रम्हा बाबा
    - शिवबाबा इन द्वारा नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना।
    - बाबा अपना मिसाल बताते हैं। मैंने 12 गुरू किये, गुरू ने कहा सुबह को उठकर 1000 मालायें जपो।
      - हम कहते थे कोई और टाइम बताओ। सारा दिन धन्धा धोरी से थक जाते हैं।
    - पतित-पावन शिवबाबा आते हैं। किसमें प्रवेश करते हैं, यह भी लिखा हुआ है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना।
  - मम्मा
    - अम्बा है ब्रह्मा की बेटी, गॉडेज ऑफ नॉलेज।
    - जगत अम्बा ज्ञानवान है, जो दूसरे जन्म में धन लक्ष्मी बनती है।


ज्ञान 2
Comparison
श्याम/ सुन्दर
भारत में ही श्याम और सुन्दर, पतित और पावन कहते हैं।
साइंस बल/साइलेन्स बल
साइलेन्स बल से स्थापना होती है, साइंस बल से विनाश।
Special point
सबकी सद्गति करने वाला एक ही शिवबाबा है, उनका तो फोटो निकाल नहीं सकते उनको दिव्य दृष्टि से ही देख सकते हैं। बाकी जाना जा सकता है।
बाप कहते हैं पतित मेरे साथ कब न मिलें। नहीं तो ले आने वाली ब्राह्मणी पर पाप चढ़ेगा।
(इन्द्र सभा की परी का मिसाल) वास्तव में इन्द्र सभा यह है।
यह ज्ञान सब्ज परियाँ, पुखराज परियाँ हैं।
बाबा सख्त मना करते हैं। कोई पतित को ले नहीं आना है।
जब पक्का निश्चय हो तब मिले। अगर मिलकर विकार में गया तो सौ गुना दण्ड पड़ेगा।
Character
लक्ष्मी-नारायण
लक्ष्मी-नारायण वही ब्रह्मा सरस्वती हैं।
यह लक्ष्मी-नारायण बलवान हैं ना। जो बलवान होते हैं वह राजाई पाते हैं।
श्रीमत
तो ऐसे सर्जन की दवाई अर्थात् श्रीमत पर क्यों नहीं चलना चाहिए। बाप की मत मानो।
तुम बच्चे जानते हो बाप की श्रीमत पर चलेंगे तो हम एवरहेल्दी बनेंगे।
बाप तुमको श्रीमत दे स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तुम फिर श्रीमत पर क्यों नहीं चलते हो।
अब बाप कहते हैं बच्चे तुम श्रीमत पर चलो।
मैं दूरदेश से आया हूँ - पतित शरीर में, पतित राज्य में। यह है रावण का देश, तुम बच्चों को आकर वर्सा देता हूँ। ऐसे बाप की आज्ञा न मानना, वह तो कपूत ठहरा।
बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो क्या पद पायेंगे। आधाकल्प से मुझे बुलाया।


योग
अविनाशी सर्जन
बाप अविनाशी सर्जन भी है, सदैव हेल्दी बनने के लिए बाबा योग सिखा रहे हैं।
मुझे याद करो।
कहते हैं ना सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह क्लेष मिटे सब तन के।
शिवबाबा के पास आये
कितना प्यार से समझाते हैं खाओ, पियो सुखी रहो, यह याद रखो हम शिवबाबा के पास आये हैं, उनसे हमारी पालना होती है।
विकर्म विनाश
मैं तुम बच्चों को स्मृति दिलाता हूँ कि मुझे याद करो, तुमको बहुत बल मिलेगा, विकर्म विनाश होंगे, बलवान बन जायेंगे।
बाप कहते हैं ऐसे मत कहो हम पवित्र नहीं रह सकते, याद में नहीं रह सकते। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे।
पावन बनकर
अब मैं कहता हूँ पावन बनकर मुझे याद करो।
पापों का बोझा
डर रहना चाहिए, हम बाप को याद कर पापों का बोझा उतारें।


धारणा
गॉडेज़ ऑफ नॉलेज
अब तुम पढ़ रहे हो। वह है गॉडेज़ ऑफ नॉलेज।
बुद्धि रूपी बर्तन
यह अच्छी रीति समझकर धारण करना है। कहते हैं ना शेरनी के दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यह ज्ञान भी है सर्वशक्तिमान् परमपिता परमात्मा का। उसके लिए भी बुद्धि रूपी बर्तन सोने का चाहिए|
भारतवासी पावन
विवेक भी कहता है कि हम भारतवासी पावन थे, इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था।
प्रतिज्ञा
अब बाप आये हैं तो अब बाप से प्रतिज्ञा करो।
विकार
विकार के पीछे इतना थोड़ेही हैरान होना चाहिए। बाबा कहते हैं यह विकार दु:ख देने वाले हैं। पतितों को पावन बनाना - यह मेरा काम है।
शिवबाबा के भण्डारे
अगर मित्र-सम्बन्धियों आदि की चीज़ पहनेंगे तो वह याद आयेंगे, पद भ्रष्ट हो जायेगा। यहाँ शिवबाबा के भण्डारे से, पतित पावन बाप के यज्ञ से परवरिश होनी है, न कि पतित घर से। और किसी की दी हुई चीज़ होगी तो वह याद आयेगा।
उसके लिए गायन है अन्तकाल जो स्त्री सिमरे... कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते बुद्धि से समझना है कि यह सब खत्म हुए पड़े हैं। हमारा तो एक बाबा है।
तमोप्रधान से सतोप्रधान
तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। यह अन्तिम जन्म है जरूर पवित्र बनो।

सेवा

मैसेज

औरों को भी रास्ता बताते रहो, मैसेज देते रहो। बाप कहते हैं मन्मनाभव। मौत सामने खड़ा है।

तुमको ही मैसेन्जर अथवा पैगम्बर कहा जाता है। तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई मैसेन्जर बन नहीं सकता।

वरदानः-

ड्रामा की ढाल को सामने रख खुशी की खुराक खाने वाले सदा शक्तिशाली भव

खुशी रूपी भोजन आत्मा को शक्तिशाली बना देता है, कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं।

इसके लिए ड्रामा की ढाल को अच्छी तरह से कार्य में लगाओ।

यदि सदा ड्रामा की स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते, खुशी गायब हो नहीं सकती क्योंकि यह ड्रामा कल्याणकारी है

इसलिए अकल्याणकारी दृश्य में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा समझ सदा खुश रहेंगे।

Key point

1. ड्रामा की ढाल
2. खुशी की खुराक खाने वाले

ये अव्यक्त इशारे -

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

सम्पन्नता वा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए देह के अभिमान से सम्पूर्ण समर्पण होना है।

ऐसे जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले हैं उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जाती है

और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब साथ जायेंगे।

देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए तब कहा जायेगा सर्व समर्पणमय जीवन,



जिसकी एक झलक मात्र पाने के लिए दुनिया वाले अपना शिर तक उतार कर रख देने को तैयार खड़े हैं।



वो विश्वनाथ तुम्हारे सामने सेवक बनकर उपस्थित है।

Please Value this invaluable Time
इसको साधारण नहीं समझो, नहीं तो अंत में खून के आंसू रोना पड़ेगा।

12.3.3. उठते ही बाप से गुडमार्निंग करो :

जरा सोचो तो सही...

(अ) प्रात: को पहले-पहले गुडमार्निंग किया जाता है। सवेरे-सवेरे कौन आकर तुमको गुडमार्निंग करते हैं? बाप आते ही हैं सवेरे। यह है बेहद का सवेरा और रात, जिसको कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते। बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। भल, बच्चे बने हैं परन्तु सवेरे उठ करके बाप को याद नहीं करते हैं। सवेरे-सवेरे उठ कर पहले-पहले शिव बाबा से गुडमार्निंग करें अर्थात् याद करें, तो बहुत खुशी भी रहे। परन्तु बहुत बच्चे हैं जो सवेरे उठ कर बाबा को बिल्कुल याद नहीं करते हैं। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठ कर भक्ति करते, पूजा करते, माला फेरते, मंत्र जपते। अब तो तुम बच्चों को आत्मा निश्चय करना है और सवेरे उठ कर बाबा से बातें करनी हैं बाबा गुडमार्निंग। परन्तु बाबा जानते हैं यह टेव किसको भी नहीं पड़ी हुई है। बाप कहते हैं — बच्चे, तुम्हारे सिर पर आधा कल्प का बोझा है, वह याद से उतारना है।





Attention Please..!



(आ) ज्ञान का चिंतन करो। सवेरे उठ कर प्यार से गुडमार्निंग करो, तो खुशी का पारा चढ़े। परन्तु माया चढ़ने नहीं देती। अगर बाप से कहाँ बेअदबी की, तो माया एकदम बुद्धियोग तोड़ डालती है। फिर बाह्यात फालतू बातों में बुद्धि लगी रहती है। स्वर्ग का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है? समझा?



(इ) बाबा जानते हैं प्रदर्शनी में बहुत सर्विस अच्छी करते हैं। परन्तु याद में बहुत कमज़ोर हैं। अक्ल नहीं है कि सवेरे उठ कर बाबा से गुडमार्निंग करनी चाहिए। भल टॉपिक्स पर ख्यालात चलाते हैं। वह तो कॉमन है। टॉपिक्स तो रोज़-रोज़ नयी निकाल समझा सकते हैं, परन्तु मुख्य बात है बाप को लव से याद करना, तो पाप कट जायें।

(ई) बाप ही इस समय तुम को आकर रूहानी आशिक बनाते हैं। अब तुम्हारी आत्मा जानती है कि हमारा माशूक शिव बाबा है। उनसे स्वर्ग का वर्सा पाना है। ऐसे शिव बाबा को सवेरे-सवेरे उठ कर गुडमार्निंग करो, याद करो। जितना याद करेंगे, उतना पाप कटते जायेंगे, देह-अभिमान टूटता जायेगा। ऐसा अभ्यास करते-करते वह





अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य



अवस्था जम जायेगी।

(उ) बाप के साथ बहुत लव रहना चाहिए। रात्रि को जल्दी सो जाओ, फिर जल्दी उठ कर याद करो। उठने से ही कहो — "बाबा गुडमार्निंग"। और कोई तरफ बुद्धि न जाये। जितना हो सके बाबा की याद में बैठ पावन बनना है।

Point to be Noted

(ऊ) स्नान भी अमृतवेले किया जाता है। सवेरे-सवेरे स्नान आदि कर फिर एकान्त में चक्कर लगाओ या बैठ जाओ, कमाई ही कमाई है। सवेरे में स्नान आदि

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click